Nov. 2020

SRMS Trust Bulletin

आयाम

SHRI RAM MURTI SMARAK TRUST
1990-2020
30
GLORIOUS YEARS
INDIA

एसआरएमएस संस्थान में मनाया गया पंच महा पर्व

PAGE 8

- राम मूर्ति जी ने दिया कृषि के आधुनिकीकरण पर जोर - PAGE 03
- ट्रस्ट के 30 वर्ष होने पर सांसद ने दी बधाई - PAGE 4-5
- डॉ. जे.के. गोयल ने मेडिकल सुपरिंटेंडेंट पद से ली विदाई - PAGE 06
- एसआरएमएस के कोरोना वीरों का सम्मान - PAGE 09
- पुरस्कृत कहानी- 'कलयुग की यशोधरा'- PAGE 14-15

Wherever The Art Medicine Is Loved. There is Also A Love Of
HUMANITY___HIPPOCRATES

Obsurge
BIOTECH LTD

Quality Healthcare with Technological Excellence.

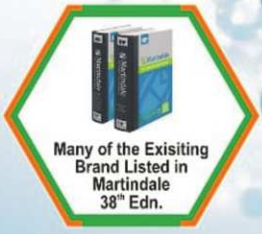

Makers of **SERADIC** *Range*

- *SERADIC-P*
- *SERADIC-MR*
- *SERADIC-AP*
- *SERADIC-PLUS*
- *THIO-SERADIC*
- *SERADIC-A*
- *SERADIC*

अभी न भूलें दो गज की दूरी और मास्क

पिछले महीने कोरोना संक्रमितों की संख्या में आ रही कमी ने केंद्र और राज्य सरकारों को राहत दी थी। लेकिन इस क्षणिक राहत के बीच दिल्ली, गुजरात और कुछ अन्य राज्यों में बढ़ने वाले संक्रमितों की संख्या ने फिर से सरकारों को चिंतित कर दिया है। फ्रांस सहित कुछ यूरोपियन देशों में भी कोरोना की दूसरी लहर ने चिंता बढ़ा दी है। विश्व स्वास्थ्य संगठन और सभी देशों की सरकारें इस पर सजग हैं। अपने देश में भी कोरोना से बचाव की अपीलें लगातार की जा रही हैं। फिर से लाकडाउन की सुगबुगाहट भी हो रही है। लेकिन इस सबके बीच आम लोग जिन्हें संक्रमण का खतरा है, वह पूरी तरह लापरवाह हो गए हैं। बाजारों में उमड़ी भीड़ की लापरवाही आसानी से देखी जा सकती है। जहां न दो गज की दूरी बनाए रखने की अपील ही मानी जा रही है और न ही मास्क लगाने की जिम्मेदारी ही आम लोग मान रहे हैं। कई स्थानों पर खुद को सुशिक्षित कहने वाले लोग भी मास्क लगाने में लापरवाही कर रहे हैं। मास्क लगा भी रहे हैं तो वह गले में पड़ा रहता है या उससे सिर्फ मुंह ढका होता है। नाक और मुंह के साथ उचित रूप से मास्क लगाने वाले बाजार में इक्का दुक्का लोग ही मिलेंगे। ऐसे में लापरवाही का बड़ा खामियाजा उठाना पड़ सकता है। इसलिए दो गज की दूरी और मास्क लगाना जरूरी मानने में ही भलाई है।

जय हिंद

अमृत कलश

''खोई चीज अक्सर वहीं मिल जाती है, जहां वो खोई है, पर विश्वास वहीं नहीं मिलता, जहाँ पर खोया गया था ।''

EDITORIAL TEAM

Amit Awasthi	-	Editor
Rishabh Tiwari	-	Correspondent
Indu Dixit	-	Photographer
Yasmeen Khan	-	Designer
Vineet Sharma	-	(Co-Ordinator, IMS)
Dr. Ekta Rastogi	-	(Co-Ordinator, IBS)

Mail us: amit.awasthi@srms.ac.in, www.srms.ac.in

13 km., Ram Murti Puram, Bareilly-Nainital Road, Bhojipura, Bareilly (U.P.) Mob.: 9458706090

राम मूर्ति जी ने दिया कृषि के आधुनिकीकरण पर जोर

यूएसए में किसानों के साथ आधुनिक खेती पर चर्चा करते स्वतंत्रता सेनानी राम मूर्ति जी। (फोटो एसआरएमएस आर्काइव)

वर्ष 1977 में स्वतंत्रता सेनानी स्वर्गीय राम मूर्ति जी ने बरेली की जनता का लोकसभा में प्रतिनिधित्व किया। उन्हें लोकसभा में डिप्टी स्पीकर की जिम्मेदारी दी गई। इसी दौरान वर्ष 1979 में उन्होंने अमेरिका, जापान, सिंगापुर, थाईलैंड और मलेशिया जैसे देशों में भारतीय दल के नेतृत्व का मौका मिला। उन्होंने इन देशों में कृषि क्षेत्र में प्रयोग की जारी रही आधुनिक तकनीकों पर विशेष ध्यान दिया। इससे किसानों की आर्थिक समृद्धि को देखा। वापस आकर संसद सत्रों में किसानों की दुर्दशा का मुद्दा उठाया। किसानों की आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए कृषि में आधुनिक तकनीकों के प्रयोग पर जोर देकर कृषि के आधुनिकीकरण पर जोर दिया। जिससे अन्नदाता किसानों की आर्थिक स्थिति में सुधार हो सके। उनके प्रयास से सरकार ने भी कृषि के आधुनिकीकरण पर ध्यान दिया। नए नए उपकरणों और तकनीक का इस्तेमाल खेती में होने लगा। कृषि का आधुनिकीकरण हुआ और किसानों की आर्थिक स्थिति में बदलाव की राह प्रशस्त हुई।

Vision

- To be partner in building India a world leader in Medical Education & Health Care.
- To establish & develop world class self reliant institute for imparting Medical and other Health Science education at under-graduate, post-graduate & doctoral levels of the global competence.
- To serve & educate the public, establish guidelines & treatment protocols to be followed by treating hospitals.
- To provide quality & affordable health care facilities and services to all sections of society.

Mission

- To strive incessantly to achieve the goals of the Institution.
- To impart academic excellence in Medical Education.
- To practice medicine ethically in line with the global standard protocols.
- To evolve the Institution to the status of a Deemed University.
- Our Students - Our Assets.
- Our Staff - Our Means.

Values

Integrity **Excellence**
Fairness **Innovativeness**

धर्मेन्द्र कश्यप
संसद सदस्य (लोक सभा)
24, आंवला (उ.प्र.)

सदस्य:
- खाद्य, उपभोक्ता मामले एवं सार्वजनिक वितरण संबंधी स्थायी समिति
- परामर्शदात्री समिति: स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय

सत्यमेव जयते

ग्राम कांधरपुर,
पो.ओ. उमरसीया,
जिला बरेली, उ.प्र.
फोन: 0581-2517091

192, नार्थ एवेन्यू,
नई दिल्ली-110 001
फोन: 011-23094127

पत्रांक: DKR/192 दिनांक: 28-09-2020

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता है कि स्वतंत्रता सेनानी एवं पूर्व सांसद, पूर्व मंत्री उत्तर प्रदेश सरकार स्वर्गीय राममूर्ती जी के चिरस्थायी रखने के उद्देश्य से स्थापित श्री राममूर्ती स्मारक (एस0आर0एम0एस0) ट्रस्ट ने अपनी स्थापना के 30 वर्ष पूरे कर लिये है। दो अक्टूबर को 31वां स्थापना दिवस मना रहे ट्रस्ट से सम्बद्ध सभी लोगो को हार्दिक बधाई। शुभकामनायें।

एसआरएमएस ट्रस्ट द्वारा लोक कल्याणकारी अनेक योजनायें संचालित की जाती है। जिनके माध्यम से निर्बल वर्ग के लोगो का मुफ्त इलाज किया जाता है और उन्हे दवाइयां भी निशुल्क प्रदान की जाती है। जनहित चिकित्सा योजना के जरिये मरीजों का निशुःल्क इलाज, दवाइयां और भोजन प्रदान करना। आम लोगो को रोजगार से जोड़ने के लिये ट्रस्ट द्वारा संचालित की जा रही सामुदायिक सेवा योजना भी सराहनीय प्रयास है। इन सबके साथ ही लॉकडाउन जैसे समय में सैकड़ों लोगो को रोजाना भोजन और परिवारों को राशन सामग्री उपलब्ध कराना भी एसआरएमएस का जनहित से जुड़ाव दिखता है।

किसी भी संस्था द्वारा जनहित में किये जा रहे ऐसे सभी कार्य सराहनीय है। मेरी ओर से जनहित के कार्यो के लिये ट्रस्ट का बधाई। स्थापना के तीस वर्ष पूर्ण करने पर पुनः हार्दिक शुभकामनायें।

धर्मेन्द्र कश्यप
धर्मेन्द्र कश्यप

संजय सिंह
अध्यक्ष
जिला पंचायत, बरेली

कैम्प कार्यालय :
S-3/12, ग्रेटर ग्रीनपार्क बरेली
निवास :
नवादा वन फरीदपुर, बरेली।
दूरभाष : 0581-2473352
मोबाइल : 9760052291

पत्रांक :

दिनांक 17–09–2020

श्री देवमूर्ति जी,
चेयरमैन श्री राम मूर्ति स्मारक ट्रस्ट
बरेली।

कृपया अपने पत्र दिनांक 05 सितम्बर 2020 का संदर्भ ग्रहण करने का कष्ट करें । संदर्भित पत्र में श्री राम मूर्ति स्मारक ट्रस्ट द्वारा कराये गये कार्यो का वर्णन है।

श्री राम मूर्ति स्मारक ट्रस्ट आपके दिशा–निर्देशन में दिन–प्रतिदिन नये आयाम स्थापित कर रहा है। आपके नेतृत्व में ट्रस्ट द्वारा जनहित की विभिन्न योजनाये संचालन संचालित की जा रही है। ट्रस्ट द्वारा गौ सेवा, स्वर्गधाम वाहन तथा मा0 प्रधानमंत्री जी के आह्वान पर प्रहलादपुर गॉव को गोद लेकर जो उसमें विकास कार्य कराये जा रहे है। आप द्वारा कराये गये कार्यो की मैं भूरि–भूरि प्रशंसा करता हूँ। इन कार्यो हेतु आप बधाई के पात्र है।

मैं ईश्वर से कामना करता हूँ कि आपके कुशल नेतृत्व में श्री राम मूर्ति स्मारक ट्रस्ट भारत में ही नही अपितु विश्व के पटल पर दर्ज हो। इसी आशा और विश्वास के साथ।

आपका
(संजय सिंह)
अध्यक्ष,
जिला पंचायत बरेली।

डा.जेके गोयल ने मेडिकल सुपरिंटेंडेंट पद से ली विदाई

टीचर के रूप में फादर नहीं मदर बने डा.गोयल

चेयरमैन देवमूर्ति जी ने दीर्घायु की कामना के साथ उन्हें दी बधाई

डॉ. जेके गोयल को स्मृति चिह्न देते चेयरमैन देव मूर्ति जी

- डा.गोयल ने एसआरएमएस में मिले प्यार और यादों को किया साझा
- बच्चे की तरह रोगियों के इलाज करने का दिया डाक्टरों को संदेश
- वर्क कल्चर, अनुशासन, गुणवत्ता संग पाजिटिव एटीट्यूट का दिया मंत्र

बरेली: 31 अक्टूबर 20 की दोपहर, अन्य दिनों की तरह सामान्य ही थी। लेकिन यह मेडिकल सुपरिंटेंडेंट पद छोड़ कर परिवार के बीच जीवन की तीसरी पारी खेलने के लिए तैयार डा.जेके गोयल की विदाई के लिए एसआरएमएस मेडिकल कालेज में हमेशा याद रखी जाएगी। भावुकता और खुशी समेटे यह दोपहर डा.आरपी सिंह, डा.संजय कुमार, डा.आनंद गौतम जाधो, डा.वनिका और डा.कुदसिया नुजहत के लिए भी खास होकर याद रहेगी। ताउम्र इसका जिक्र इनकी जुबान पर रहेगा। विदाई की भावुकता में प्रमोशन का जोश भरती इस दोपहर चेयरमैन देवमूर्ति जी ने डा.जेके गोयल के लिए दीर्घायु की कामना की और उनसे एसआरएमएस परिवार को हमेशा आशीर्वाद देने की अपील की। साथ ही उन्होंने पदोन्नत हुए डा.आरपी सिंह समेत सभी डाक्टरों को भी शुभकामनाएं दीं। देव मूर्ति जी ने कहा कि टीचर को हमेशा फादर के रूप में माना जाता है। वह विद्यार्थी को पिता की तरह दुलार देता है, लेकिन डा.गोयल ने यहां बच्चों को मां का प्यार भी दिया। वह स्टूडेंट के लिए टीचर के रूप में फादर से ज्यादा मदर बने। मां की तरह उनके एक्जाम, रिसर्च और रहने तक की चिंता की। समय और दिन रात की परवाह किए बिना वह हमेशा इसी काम में लगे रहे। यही वजह है कि डा.गोयल यहां के स्टूडेंट के साथ संस्थान के सभी डाक्टरों और अन्य साथियों को याद रहेंगे। परिवर्तन प्रकृति का नियम है। हम सभी इसमें बंधे हैं। इसीलिए तीसरी पारी खेलने की डा.गोयल की इच्छा का सम्मान करते हैं। उम्मीद करते हैं कि वह परिवार के साथ अगली महत्वपूर्ण पारी खेलें। तीसरी पीढ़ी को समय और संस्कार दें। एसआरएमएस मेडिकल कालेज से आरंभ से ही संबद्ध रहने की वजह से ट्रस्ट परिवार हमेशा आपको याद रखेगा।

डा.जेके गोयल ने विदाई समारोह को भावुकता का क्षण कहा। यहां व्यतीय हुए दिनों को खुशी की यात्रा बताया। सेना से आने के बाद एसआरएमएस के अनुशासन की तारीफ की और इस मेडिकल कालेज को अपना घर बताया। कहा कि यहां हमेशा परिवार की तरह ही प्यार और सम्मान मिला। यहां जो भी जिम्मेदारियां मिलीं उन्हें शिद्दद से निभाया। इलाज के लिए यहां बेहतरीन माहौल मिला और मरीजों को गुणवत्तापूर्ण सुविधाएं भी मिलती देखीं। डा.गोयल ने संतुष्टि को ज्यादा बड़ा बताया। कहा कि संतुष्टि खुद को भी यहां मिली और मरीजों के लिए भी। इसकी वजह एसआरएमएस संस्थान का वर्क कल्चर, अनुशासन, गुणवत्ता है। यह गुणवत्ता पेशेंट केयर, एजूकेशन और रिसर्च तीनों में है। संस्थान

की पाजिटिव सोच और एटीट्यूट की वजह से ही एसआरएमएस देश के सबसे अच्छे संस्थानों में से एक है। उन्होंने इसके लिए एसआरएमएस का आभार जताया। साथ ही इसके निरंतर बढ़ने की कामना की और सहयोगियों को भी धन्यवाद दिया। उन्होंने इस मौके पर उपस्थित लोगों को कुछ टिप्स भी दिए। कहा कि मरीज अपने परिवार से भी ज्यादा अपने डाक्टर पर विश्वास करता है। मरीज के विश्वास पर खरा उतरने के लिए उसे बच्चे की तरह समझना चाहिए। उसे सही परामर्श देने के साथ ही हर बात पर उसका सपोर्ट करना जरूरी है। ऐसा करने वाले डाक्टर हमेशा मरीजों से सम्मान पाते हैं और मरीज आजीवन उन्हें नहीं भूलते।

इससे पहले डिप्टी मेडिकल सुपरिंटेंडेंट डा.आरपी सिंह ने डा.जेके गोयल के साथ बिताए दिनों का जिक्र किया। उनके काम के साथ उनका संक्षिप्त परिचय भी उपस्थित लोगों को दिया। गायनेकोलाजिस्ट के रूप में डा.गोयल की चुनौतियों की भी बात की। प्रिंसिपल डा.एसबी गुप्ता ने डा.गोयल को गायनेकोलाजी डिपार्टमेंट का बेंचमार्क बताया। उन्होंने कहा कि अनुशासन डा.गोयल के जीवन में हमेशा रहा। इसकी वजह भले ही उनका फौज से जुड़ा रहना हो लेकिन वह आज तक नियमित और अनुशासित दिनचर्या का पालन करते रहे हैं। एसआरएमएस में उनसे पहली मुलाकात के दौरान ही मैं उनके अनुशासन का प्रशंसक हो गया। डा.गोयल को छुट्टियों में भी स्टूडेंट की थिसिस, एक्जाम की चिंता करते देखा है। यह उनका कमिटमेंट ही था कि वह संडे या दूसरी छुट्टियों में भी विद्यार्थियों को पढ़ाने से कभी पीछे नहीं हटे।

डा.गुप्ता ने डा.गोयल की फेयरवेल को शरीर से आत्मा को अलग करने जैसा बताया। कहा कि इसके बाद भी परिवार के साथ तीसरी पारी के लिए तैयार डा. गोयल को शुभकामनाएं। इस मौके पर डायरेक्टर एडमिनिस्ट्रेशन आदित्य मूर्ति, डा.पियूष अग्रवाल, डा.ललित सिंह, डा.पीएल प्रसाद, डा.एसके सागर, डा. प्रतीक गहलोत, डा.स्मिता गुप्ता, डा.बिंदू गर्ग, डा.सुजाता सिंह, डा.राहुल गोयल, डा.मिलन जायसवाल, डा.पीके परडाल, डा.शशि बाला आर्या, डा.एमपी रावल, डा.तारिक महमूद, डा.जसविंदर सिंह, डा.संजय कुमार, डा.तनु अग्रवाल, डा. अभिनव पांडेय, मैटर्न सिस्टर जोएस, संजीव गुप्ता, अजीत सक्सेना सहित कई फैकल्टी मेम्बर मौजूद रहे।

डा.आरपी सिंह बने मेडिकल सुपरिंटेंडेंट

फेयरवेल पार्टी में डिप्टी मेडिकल सुपरिंटेंडेंट लेफ्टिनेंट कर्नल डा.आरपी सिंह को मेडिकल सुपरिंटेंडेंट बनाए जाने की घोषणा की गई। उन्हें पदोन्नति पत्र चेयरमैन देव मूर्ति जी ने दिया। इसी के साथ जनरल मेडिसिन विभाग के डा.संजय कुमार, फिजियोलाजी विभाग के आनंद गौतम जाधो और पैथोलाजी विभाग की डा.वंशिका को एसोसिएट प्रोफेसर पद पर प्रमोट किया गया। इसी के साथ फार्मेकोलाजी विभाग की डा.कुदसिया नुजहत को असिस्टेंट प्रोफेसर बनाया गया। सभी को प्रमोशन लैटर चेयरमैन देव मूर्ति जी ने दिया और सभी को भविष्य की शुभकामनाएं दीं।

डॉ. आरपी सिंह

डॉ. संजय कुमार

डॉ. आनंद गौतम जाधो

डॉ. कुदसिया नुजहत

डॉ. वंशिका

राधा मोहन मंदिर में प्रसाद वितरण

दीपावली पूजन

एसआरएमएस संस्थान में मनाया
पंच महा पर्व

दीप दान

शुभ दिवाली

गोवर्धन पर गौ पूजा

दीप दान

दीपावली पूजन

एसआरएमएस के कोरोना वीरों का सम्मान

राउंड टेबिल की ओर से एसआरएमएस में दस यूनिट ब्लड डोनेट भी किया गया

बरेली: समाजसेवी संस्था राउंड टेबल की ओर से 23 नवम्बर को एसआरएमएस के कोरोना वीरों को सम्मानित किया गया। संस्था की बरेली इकाई ने एसआरएमएस को 10 पीपीई किट भी सौंपीं और दस यूनिट ब्लड भी डोनेट किया। संस्था के चेयरमैन कुशल भार्गव, अभिषेक कपूर, सनी आनंद, पारिजात गुप्ता, अभिनव अग्रवाल ने सभी को स्मृति चिन्ह प्रदान कर प्रोत्साहित किया। कुशल भार्गव ने संस्था द्वारा किए जा रहे सामाजिक कार्यों की जानकारी दी। साथ ही कोविड संक्रमित मरीजों के इलाज में एसआरएमएस की भूमिका की भी सराहना की। उन्होंने कहा कि इस महामारी से जूझते मरीजों के इलाज में एसआरएमएस के योगदान को अनदेखा नहीं किया जा सकता। यहां के स्टाफ ने खुद की परवाह किए बिना लोगों की सेवा की। खुद भी संक्रमित हुए लेकिन इलाज में कमी नहीं आने दी। कुशल भार्गव और राउंड टेबल के अन्य सदस्यों ने कोविड संक्रमितों और प्लाजा डोनेट करने वाले चुनिंदा 15 लोगों को सम्मानित किया। साथ ही एसआरएमएस ब्लड बैंक में दस यूनिट रक्तदान भी किया और दस पीपीई किड भी एसआरएमएस मेडिकल कालेज के मेडिकल सुपरिंटेंडेंट डा.आरपी सिंह को सौंपी। मेडिकल कालेज के डायरेक्टर एडमिनिस्ट्रेशन आदित्य मूर्ति ने संस्था के सहयोग पर आभार जताया और कोविड की दूसरी लहर के लिए भी तैयारी पूरी होने का भरोसा दिया। कार्यक्रम का संचालन विनीत वर्मा ने किया।

इन्हें किया गया सम्मानित– डा.मिलन जायसवाल, डा. हुमा खान, डा.निपुन अग्रवाल, डा.सांची जैन, डा.सुलक्षणा, डा.अभिषेक दीक्षित, डा.अभिनव पांडेय, डा.नकुल गुप्ता, सुनील चंद्रा, शिवराम शर्मा, ज्ञान प्रकाश शर्मा, अर्चना गंगवार, खुशबू वर्मा, शारंका सुल्तानिया, हरिओम गुप्ता।

गंभीर मरीजों के लिए जरूर करें प्लाज्मा डोनेट

मैं सुनील चंद्रा। उम्र 45 वर्ष, निवासी संतनगर (इज्जतनगर), बरेली। एसआरएमएस आईएमएस में कारपोरेट मैनेजर के पद पर कार्यरत हूं। सितंबर की 18 तारीख को अस्पताल से घर पहुंचा तो हरारत महसूस हुई। बिटिया ने थर्मामीटर से टेंपरेचर चेक किया तो पारा 102 डिग्री फारेनहाइट मिला। बुखार की दवाई ले ली। रात में छाती में हल्का दर्द होने लगा। स्वास्थ्यकर्मी होने के नाते पिछले पांच महीने से मैं कोविड-19 के केस देख रहा था। यह भी पता था कि मैं कभी भी कोविड पाजिटिव हो सकता हूं। इस नाते बुखार और दर्द होने पर डर नहीं लगा। सुबह होते ही मैंने अस्पताल पहुंच कर अपना कोविड टेस्ट कराया। रिपोर्ट पाजिटिव थी। डाक्टरों ने एडमिट होने की सलाह दी। 14 दिन मैं अस्पताल में भर्ती रहा। दोबारा हुए कोविट टेस्ट के निगेटिव होने पर डाक्टरों की सलाह पर तीन अक्टूबर को घर चला गया। अगले दिन रविवार को घर पर आराम करने के बाद सोमवार से फिर से नियमित काम पर लौट आया।

मुझे याद है चार नवंबर का दिन था। अचानक हमारे मेडिकल कालेज के ब्लड बैंक की एचओडी डा. मिलन जायसवाल का फोन आया। उन्होंने सीधे पूछा, सुनील जी क्या आप प्लाज्मा डोनेट कर सकते हैं। आईसीयू में भर्ती एक ए पाजिटिव ब्लड ग्रुप के कोविड मरीज की हालत गंभीर है। मैंने सहमति दे दी और बिना देर किए उनके पास पहुंच गया। मेरे लिए यह अनोखा अनुभव था। क्योंकि मैंने ब्लड डोनेट तो कई बार किया, लेकिन पहली बार प्लाज्मा डोनेट करने का मौका मुझे मिला था। इसीलिए चार नवंबर की तिथि मुझे हमेशा याद रहेगी। प्लाज्मा डोनेट करने की प्रक्रिया में करीब दो घंटे का समय लगा। इस कार्य पर हमारे डायरेक्टर एडमिनिस्ट्रेशन आदित्य मूर्ति जी, एमएस डॉ. आर.पी. सिंह और डॉ. मिलन जायसवाल ने भी बधाई दी। मैं पूरी तरह स्वस्थ रूप से वहां से निकल कर वापस अपना काम करने लगा। पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के तहत ही अगले दिन आफिसियल टूर पर पिथौरागढ़ और अल्मोड़ा गया। इस दौरान भी मुझे किसी प्रकार की कोई कमजोरी या हरारत का अहसास नहीं हुआ। चार दिन के टूर के बाद मैं वापस लौटा और बिना किसी तकलीफ के लगातार काम कर रहा हूं। मैं कोविड संक्रमण से निजात पा चुके सभी कोरोना योद्धाओं से अपील करूंगा कि वह प्लाज्मा डोनेट करें। जिससे इस महामारी से जूझ रहे गंभीर मरीजों का उपचार आसानी से संभव हो पाए। उन्हें जरूरत पर प्लाज्मा थेरेपी मिल सके। आपका यह कदम कोविड मरीजों की जिंदगी बचा सकता है।

सुनील चन्द्रा को स्मृति चिहन देते आदित्य मूर्ति जी

एसआरएमएस मेडिकल कालेज का आरआर कैंसर इंस्टीट्यूट कर रहा लोगों को स्वस्थ

लड़कर दी कैंसर महामारी को मात

कुशल डाक्टरों की टीम के इलाज से एसआरएमएस में स्वस्थ हो रहे कैंसर मरीज

- शुरूआती चरणों में पूरी तरह से कैंसर महामारी पर काबू करना संभव
- किसी भी दर्द और घाव की एक महीने से ज्यादा अनदेखी खतरनाक
- शरीर में किसी भी अनियंत्रित गांठ की अनदेखी बन सकती है जानलेवा

बरेली: कैंसर... आपने नाम भी सुना होगा और इसकी भयावहता से वाकिफ भी होंगे। ऊपरवाला न करे कभी किसी को यह बीमारी अपनी चपेट में ले। हालांकि सभी इतने खुशकिस्मत नहीं होते। बीमारियों का इलाज कराते समय अचानक उन्हें कैंसर होने की जानकारी मिलती है। पैरों के नीचे से जमीन खिसक जाती है और आंखों के सामने अंधेरा छा जाता है। मरीज के साथ यही हाल परिवार वालों का भी होता है। फिर भी कुछ लोग हिम्मत रखते हैं। लड़ते हैं इस भयंकर और लाइलाज कही जाने वाली बीमारी से। जीतते भी हैं और मुस्कुराकर फिर अपनी स्वस्थ जिंदगी गुजारते हैं। जैसे कभी कुछ हुआ ही न हो। लड़कर कैंसर से जीतने वाले ऐसे ही कुछ योद्धाओं से आज आपकी मुलाकात कराते हैं। ये कोई सेलिब्रिटी नहीं, जो विदेश गए हों और महंगा इलाज करा कर स्वस्थ हुए हों। यह आपके आसपास के ही आम लोग हैं। जिन्होंने बरेली में ही रहकर एसआरएमएस इंस्टीट्यूट आफ मेडिकल साइंसेज के आरआर कैंसर इंस्टीट्यूट एंड रिसर्च सेंटर में इलाज कराया और जानलेवा समझी जाने वाली बीमारी कैंसर को मात दी।

भावनात्मक और आर्थिक तनाव भी

वैश्विक रूप से देखें तो बीमारी से होने वाली मौतों में कैंसर दूसरा सबसे बड़ा कारण हैं। वर्ष 2018 में करीब 96 लाख लोगों की कैंसर से जान गई। यानी छह में एक मरीज के निधन की वजह कैंसर बना। फेफड़ा, प्रोस्टेट, कोलोरेक्टल, पेट और लिवर कैंसर से पुरुष ज्यादा प्रभावित हुए। जबकि ब्रेस्ट,

भोजीपुरा निवासी रामभरोसे लाल की पत्नी भगवान देवी (61) को आठ वर्ष पहले पेट में दर्द की शिकायत थी और बच्चेदानी से गंदा पानी और खून लगातार आता था। खाना भी हजम नहीं होता था और थोड़ा सा चलने में थक जाती थीं। निजी अस्पताल में जांच कराई। वहां इन्हें बच्चेदानी के कैंसर की जानकारी मिली। ज्यादा खर्च होने के चलते रामभरोसे ने पत्नी को एसआरएमएस में भर्ती कराया। यहां रेडियोथेरेपी और कीमो किया गया। आज भगवान देवी पूरी तरह स्वस्थ हैं। वे इसके लिए एसआरएमएस का आभार जताती हैं।

माडल टाउन (बरेली) निवासी व्यवसायी कमल अरोरा (52) को लगातार सिरदर्द की समस्या थी। चक्कर आता था और यह गिर पड़ते थे। नर्सिंग होम में दिखाया। जांच में ब्रेन ट्यूमर का पता चला। सर गंगाराम में इलाज शुरू हुआ। दुर्लभ ब्रेन कैंसर (एनाप्लास्टिक एस्ट्रोसिटोमा) की जानकारी मिली। वहां डाक्टरों ने जवाब दे दिया। इस पर एसआरएमएस लाया गया। अब कमल पूरी तरह स्वस्थ हैं। वे इसका श्रेय एसआरएमएस मेडिकल कालेज और यहां के डाक्टरों को देते हैं। कहते हैं कि यहां उपचार की बदौलत ही स्वस्थ हुआ हूं।

आठ साल पहले बिहारीपुर निवासी रानी (73) को पेशाब संबंधी दिक्कतें महसूस हुईं। पेशाब करने में जलन होती थी। निजी अस्पताल में दिखाया गया। वहां कैंसर की पुष्टि हुई। आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के चलते परिवार वालों ने रानी को 13 मार्च 2012 को एसआरएमएस में भर्ती कराया। आपरेशन हुआ और फिर पांच हफ्ते सिकाई हुई। आज रानी पूरी तरह स्वस्थ हैं। बीच बीच में जांच के लिए एसआरएमएस जा रही हैं। रानी के मुताबिक कैंसर की जानकारी पर हम सब डर गए थे, लेकिन एसआरएमएस के डाक्टरों ने सब ठीक किया।

प्राइवेट जाब करने वाले आलमगिरीगंज निवासी राजेश कुमार (52) के गले में गांठ थी। खाने-पीने में परेशानी होने पर ये एसआरएमएस (25 अगस्त 13) पहुंचे। जांच में गले का कैंसर पता चला। इस घरवालों के साथ राजेश भी डर गए। लेकिन डा.पियूष अग्रवाल ने हिम्मत बंधाई। पूरी तरह इलाज से बीमारी ठीक होने का भरोसा दिलाया। रेडियोथेरेपी और कीमो शुरू हुआ। करीब दो महीने इलाज चला। आज राजेश पूरी तरह स्वस्थ हैं। राजेश भी बीमारी से निजात के लिए एसआरएमएस और यहां के डाक्टरों का आभार जताते हैं।

कोलोरेक्टल, फेफड़ा और सरवाइकल कैंसर ने महिलाओं पर ज्यादा असर डाला। तेजी से फैल रही यह बीमारी लोगों को भयभीत करने के साथ परिवारों, समाज और स्वास्थ्य सेवाओं पर असर भी असर डाल रही है। इससे शारीरिक, भावनात्मक और वित्तीय रूप से भी तनाव बढ़ रहा है।

क्या और क्यों है कैंसर

कैंसर खुद में कोई बीमारी नहीं बल्कि कोशिकाओं की अनियंत्रित वृद्धि है। जो शरीर के किसी भी अंग में, कभी भी और किसी भी उम्र हो सकती है। यह वृद्धि एक अंग से होती हुई शरीर के दूसरे भाग को भी प्रभावित कर सकती है। शरीर का न भरने वाला घाव, किसी अंग विशेष में लगातार दर्द, तेजी से बढ़ रही गांठ कैंसर की वजह हो सकती है। हां हर गांठ कैंसर नहीं होती। अस्वास्थ्यकर खानपान, जीवनशैली और प्रदूषण कैंसर के लिए जिम्मेदार होते हैं। इनसे बचाव और जागरूकता कैंसर रोकने में कारगर है।

डराते हैं कैंसर के ये भयावह आंकड़े

भारत में प्रति मिनट सरवाइकल कैंसर से एक एक महिला की मृत्यु देश में प्रति मिनट दो महिलाओं में ब्रेस्ट कैंसर का पता चलता है और एक की मौत हो जाती है। देश में तंबाकू की वजह से मुंह के कैंसर से प्रतिदिन 3500 लोगों की मृत्यु। वर्ष 2018 में कैंसर से कुल 7,84,921 लोगों की मौत। धुएं (बीड़ी, सिगरेट के धुएं सहित) से वर्ष 2018 में 3,17,928 लोगों की मौत। कैंसर से मरने वाले पुरुषों में सबसे ज्यादा 25 फीसद वजह मुंह और फेफड़ों का कैंसर। जबकि महिलाओं में सबसे ज्यादा 25 फीसद वजह मुंह और ब्रेस्ट कैंसर।

एसआरएमएस के आरआर कैंसर इंस्टीट्यूट में हैं सुविधाएं

रेडिएशन ओंकोलाजी: इसे रेडियोथेरेपी भी कहते हैं। इसमें कैंसरयुक्त कोशिकाओं को रेडियेशन के जरिये हटाया जाता है। यह काम टेलीथेरेपी और ब्रेकीथेरेपी जैसी दो तकनीकों से किया जाता है। आरआर कैंसर इंस्टीट्यूट एंड रिसर्च सेंटर में इसके लिए अत्याधुनिक टेक्नालाजी की मशीनों का प्रयोग होता है। टेलीथेरेपी के लिए यहां हाई एनर्जी लीनियर एक्सिलेटर और ट्रूबीम जैसी एडवांस मशीने हैं। ट्रूबीम से उपचार दूसरी किसी भी एडवांस रेडियेशन मशीन के मुकाबले 75 फीसद फास्ट होता है। आरआर कैंसर इंस्टीट्यूट में ब्रैंकीथेरेपी के लिए माइक्रोसेलेक्ट्रोन एचडीआर (हाईडोज रेड) उपलब्ध है।

सर्जिकल ओंकोलाजी: इसके लिए आरआर कैंसर इंस्टीट्यूट एंड रिसर्च सेंटर में अनुभवी और कुशल ओंको सर्जन के साथ न्यूरोसर्जन, यूरोलाजिस्ट, प्लास्टिक सर्जन, जीआई सर्जन, लैप्रोस्कोपिक सर्जन, ईएनटी, हेड एंड नेक सर्जन जैसे सुपरस्पेशलिस्ट की टीम भी मौजूद हैं। यह किसी भी प्रकार की कैंसर सर्जरी में सक्षम हैं।

मेडिकल ओंकोलाजी: इसे कीमोथेरेपी भी कहते हैं। इसके लिए 60 बेड का वार्ड अलग से उपलब्ध है। जहां अनुभवी कीमोथेरेपिस्ट कैंसर के मरीज का उपचार करते हैं। कीमोथेरेपी के मरीजों के लिए अत्याधुनिक हाईपैक सर्जरी की भी सुविधा यहां उपलब्ध है। जिसे हाइपरथर्मिक इंट्रा पेरीटोनियल कीमोथेरेपी भी कहते हैं। हाईपैक सर्जरी में मरीज के कैंसरयुक्त अंग की सर्जरी के साथ उस भाग की कीमोथेरेपी भी एक साथ, एक ही समय पर की जाती है। इससे समय भी बचता है और स्वस्थ होने की उम्मीद भी बढ़ जाती है। इंस्टीट्यूट टार्गेट थेरेपी और हार्मोनल थेरेपी जैसी अत्याधुनिक तकनीकों से भी कैंसर पीड़ितों का उपचार कर रहा है।

ट्यूमर बोर्ड: कैंसर रोगियों के उपचार के लिए एसआरएमएस कैंसर इंस्टीट्यूट में ट्यूमर बोर्ड भी है। जिसमें रेडियोलाजिस्ट, रेडिएशन ओंकोलाजिस्ट, मेडिकल ओंकोलाजिस्ट, पैथोलाजिस्ट और कैंसरयुक्त शरीर के अंग से संबंधित विभाग का एक स्पेशलिस्ट सर्जन शामिल है। कैंसर पीड़ित मरीज की रिपोर्ट और वर्तमान स्थिति की रिपोर्ट इस बोर्ड के सामने रखी जाती है। बोर्ड में शामिल सभी विशेषज्ञ उपचार के संबंध विमर्श करते हैं। सबकी राय के बाद उपचार शुरू किया जाता है। इससे गलतियों की संभावना नहीं के बराबर होती हैं।

शुरूआत में ही बचाव एकमात्र उपाय

कैंसर लाइलाज नहीं है। जागरुकता की कमी से लोग इसके शिकार हो रहे हैं। शुरूआती चरणों में पूरी तरह से इस पर काबू संभव है। लेकिन इसकी जांच के लिए बायोप्सी कराने से डरना। रेडियोथेरेपी और कीमोथेरेपी को लेकर गलत धारणाओं से लोग इसके इलाज से बचते हैं। इस लापरवाही के कारण यह बीमारी अंतिम चरण में पहुंच कर लाइलाज हो जाती है। यदि समय से जांच और इलाज कराया जाए। तो इसे प्रारंभिक अवस्था में ही पकड़ा जा सकता है और इसका पूर्ण इलाज संभव है।

डा.पियूष कुमार अग्रवाल, कैंसर विशेषज्ञ, एसआरएमएस इंस्टीट्यूट आफ मेडिकल साइंसेज

आर आर कैंसर इन्स्टीट्यूट एण्ड रिसर्च सेंटर की यह हैं विशेषज्ञ टीम

डा.पियूष कुमार अग्रवाल (प्रोफेसर)
HOD, रेडिएशन ऑन्कोलॉजी

डा.अरविंद कुमार चौहान
प्रोफेसर, रेडिएशन ऑन्कोलॉजी

डा.पवन कुमार मेहरोत्रा
एसो. प्रो., रेडिएशन ऑन्कोलॉजी

डा.आयुष गर्ग
असिस्टेंट प्रो., रेडिएशन ऑन्कोलॉजी

डा.शुभांशु गुप्ता
असिस्टेंट प्रो., ऑन्कोलॉजी सर्जरी

डा.रशिका सचान
असिस्टेंट प्रो., रेडिएशन ऑन्कोलॉजी

NEW EMPLOYEE

(Till 27th Nov. 2020)

डा. नमिता दीक्षित, एसोसिएट प्रोफेसर
पीएचडी, मास्टर्स ऑफ बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन (इंटरनेशनल बिजनेस), मास्टर्स आफ कामर्स
एसआरएमएस आईबीएस, लखनऊ

शुभम निगम, असिस्टेंट प्रोफेसर
एम.काम, यू.जी.सी. नेट
एसआरएमएस आईबीएस, लखनऊ

वैभव श्रीवास्तव, असिस्टेंट प्रोफेसर
एम.बी.ए, एम.फिल (प्रबंधन)
एसआरएमएस आईबीएस, लखनऊ

निधि सिंह, असिस्टेंट प्रोफेसर
एम काम, यूजीसी नेट
पीजीडीएम, बीएड. एमए (अर्थशास्त्र)
एसआरएमएस आईबीएस, लखनऊ

मोहम्मद मोईन, कन्सलटेंट
एमसीएच (न्यूरो सर्जरी)
एसआरएमएस आईएमएस, बरेली

डा.विद्यानंद, असिस्टेंट प्रोफेसर
डीएनबी (नेफ्रोलाजी)
एमडी मेडिसिन, एमबीबीएस
एसआरएमएस आईएमएस, बरेली

डा.शशांक भंसाली, असिस्टेंट प्रोफेसर
डीएनबी (गैस्ट्रोइंटेरोलाजी) एमडी (मेडिसिन)
एसआरएमएस आईएमएस, बरेली

मोहम्मद नदीम, असिस्टेंट प्रोफेसर
एम एस, जनरल मेडिसिन
एसआरएमएस आईएमएस, बरेली

डा.सिद्धार्थ दुबे, असिस्टेंट प्रोफेसर
एमएस (आर्थोपैडिक्स)
एसआरएमएस आईएमएस, बरेली

डा. रशिका सचान, असिस्टेंट प्रोफेसर
एमडी (रेडियोथैरेपी)
एसआरएमएस आईएमएस, बरेली

डा.शैलजा शर्मा, असिस्टेंट प्रोफेसर
एमएस (ऑब्स एण्ड गायनी)
एसआरएमएस आईएमएस, बरेली

डा.सौम्या झा, सीनियर रेजीडेंट
डीएनबी (ओटो रिनोलेरिंगियोलाजी)
एसआरएमएस आईएमएस, बरेली

डा.संगीता कुमारी, कंसल्टेंट
डीएनबी (रेडियोडायग्नोसिस)
एसआरएमएस आईएमएस, बरेली

एसआरएमएस ट्रस्ट के संस्थानों में संबद्ध होने वाले सभी नए एवं पदोन्नत साथियों को **बधाई एवं शुभकामनाएं...**

PROMOTION

निशी भारद्वाज
असिस्टेंट मैनेजर
क्वालिटी डिपार्टमेंट
एसआरएमएस आईएमएस, बरेली

चेहरे की कमी और बेडौल अंगों से परेशान हो खुद को न दें इल्जाम, कॉस्मेटिक सर्जरी से

पाएं आकर्षक चेहरा और सुडौल शरीर

- एसआरएमएस मेडिकल कॉलेज में हैं विश्वस्तरीय सुविधाएं और विशेषज्ञ डॉक्टरों की टीम
- बड़े शहरों में होने वाली प्लास्टिक सर्जरी का खर्च एसआरएमएस में वहां से काफी कम

बरेली: हादसे के बाद चेहरे सहित विकृत अंगों को सही आकार और रूप देने के लिए प्लास्टिक/कास्मेटिक सर्जरी का सहारा लिया जाना आम बात है। इसकी मदद से जले हुए अंगों को भी दुरुस्त किया जाता है। लेकिन आज कल खुद को सुंदर बनाने और दिखाने के लिए इसकी सहायता ज्यादा ली जाती है। बहुत से सेलिब्रिटी इसका इस्तेमाल शरीर के किसी विशिष्ट अंग जैसे पेट, बाल, ब्रेस्ट, नाक, चेहरे को आकर्षक बनाने के लिए करते हैं। इसी वजह से आम लोगों में भी इसके प्रति उत्सुकता बढ़ रही है। आज इसी पर बात करते हैं बरेली स्थित एसआरएमएस मेडिकल कालेज के असिस्टेंट प्रोफेसर कास्मेटिक सर्जन डा.शोभित शर्मा से।

सवाल- प्लास्टिक सर्जरी क्या है ?

डा.शोभित- प्लास्टिक सर्जरी का मतलब ऐसे ऑपरेशन से है। जिसमें किसी व्यक्ति के विकृत अंगों को सही आकार और रूप दिया जा रहा हो। यह विकृति जन्मजात या किसी हादसे की वजह से भी हो सकती है। शारीरिक सौंदर्य बढ़ाने में भी आजकल प्लास्टिक/कास्मेटिक सर्जरी का काफी इस्तेमाल हो रहा है। कोई भी व्यक्ति अपने सौंदर्य को बढ़ाने के लिए शरीर या अंगों में कुछ बदलाव करना चाहता है, तो वह कास्मेटिक सर्जरी का सहारा लेता है।

सवाल- सौंदर्य बढ़ाने के लिए कास्मेटिक सर्जरी का कैसे इस्तेमाल करते हैं ?

डा.शोभित- सौंदर्य बढ़ाने के लिए कास्मेटिक सर्जरी का मुख्य रूप से इन तरीके से इस्तेमाल होता है।

गायनिकोमस्टिया सर्जरी- जब पुरुषों की छाती/स्तन का आकार समान्य से बड़ा हो जाता है तब इस सर्जरी का इस्तेमाल उन्हें सामान्य आकार देने में किया जाता है।

ब्रेस्ट एनहांसमेंट सर्जरी- यह ऐसी सर्जरी से है, जिसे ब्रेस्ट के आकार को बढ़ाने के लिए किया जाता है। इसे ब्रेस्ट इंप्लांट सर्जरी नाम से भी जाना जाता है।

ब्रेस्ट रिडक्शन सर्जरी- इसमें ब्रेस्ट के आकार को कम किया जाता है।

हेयर ट्रांसप्लांट सर्जरी- जिन लोगों के सिर पर कम बाल होते हैं, उनके लिए बाल प्रत्यारोपण किसी वरदान से कम नहीं है। आज के दौर में बहुत से पुरूष और महिलाएं बाल प्रत्यारोपण सर्जरी का लाभ उठा रहे हैं।

लेजर हेयर रिमूवल- कुछ लोग अपने शरीर पर मौजूद अनचाहे बालों से काफी परेशान रहते हैं। समस्या का समाधान लेजर हेयर रिमूवल से किया जाता है।

लिपोसक्शन सर्जरी- इस सर्जरी में शरीर के किसी विशेष अंग पर मौजूद एक्स्ट्रा फैट हटाया जाता है।

सवाल- क्या कास्मेटिक सर्जरी बरेली में संभव है?

डा.शोभित- जी बिल्कुल। अभी तक दिल्ली जैसे बड़े शहरों में ही कास्मेटिक सर्जरी संभव थी, लेकिन अब बरेली में भी इसकी सुविधा है। यहां श्री राम मूर्ति स्मारक मेडिकल कालेज में इसके लिए विश्वस्तरीय सुविधाएं और विशेषज्ञ डाक्टर हैं, जो हर प्रकार की कास्मेटिक सर्जरी में सक्षम हैं। यहां ब्रेस्ट एनहांसमेंट, ब्रेस्ट रिडक्शन, बट इंप्लांट, हेयर ट्रांसप्लांट, लेजर हेयर रिमूवल, लिपोसक्शन के साथ ही कटे और जले हुए अंगों को ठीक करने के साथ ही नाक, कान, होंठों और पेट के आकार को भी दुरुस्त किया जाता है। आज कल युवाओं में गाल पर डिंपल बनवाने का क्रेज है। एसआरएमएस मेडिकल कालेज में डिंपल भी आसानी से बनाए जाते हैं और ढीले गालों को टाइट करने के साथ ही गालों या किसी भी अंग की स्किन पर पड़े दाग या निशान भी प्लास्टिक/कास्मेटिक सर्जरी से हटाए जाते हैं। कैंसर ग्रस्त अंगों को निकालने के बाद उनका निर्माण भी यहां पर हम लोग सफलतापूर्वक कर रहे हैं।

सवाल- कास्मेटिक सर्जरी पर खर्च क्या है?

डा.शोभित-कास्मेटिक सर्जरी की लागत अस्पताल, सर्जन का अनुभव, आपरेशन के तरीके पर निर्भर करती है। अलग-अलग कास्मेटिक सर्जरी पर अलग खर्च आता है। फिर भी विश्वस्तरीय सुविधाएं और विशेषज्ञ डाक्टरों के साथ एसआरएमएस मेडिकल कालेज में कास्मेटिक सर्जरी पर खर्च दिल्ली जैसे शहरों के मुकाबले काफी कम है। यहां भी अपने बजट के अनुसार सर्जरी को चुना जा सकता है।

सवाल- कास्मेटिक सर्जरी के लाभ क्या हैं ?

डा.शोभित- कास्मेटिक सर्जरी के बहुत से लाभ हैं। आत्मविश्वास को बढ़ाना- बहुत से लोग अपने शरीर के आकर्षक न होने के कारण कई बार अपमानित महसूस करते हैं। या अपमानित होना पड़ता है। इसके उनमें आत्मविश्वास की कमी आ जाती है। इस स्थिति में कास्मेटिक सर्जरी उनके शरीर को आकर्षक बनाती है, जिससे उनके आत्मविश्वास के स्तर में भी वृद्धि होती है। सेहत में सुधार करना- कई महिलाओं को अपने ब्रेस्ट के असंतुलित आकार के कारण स्वास्थ संबंधी समस्याओं से गुजरना पड़ता है। ब्रेस्ट इंप्लांट और ब्रेस्ट रिडक्शन सर्जरी से उनके ब्रेस्ट को उचित आकार प्रदान किया जाता है। जिससे उन्हें बहुत सी समस्याओं से निजात मिल जाती है। उनकी सेहत में भी सुधार होता है।

श्री राममूर्ति स्मारक ट्रस्ट द्वारा आयोजित कहानी प्रतियोगिता 1996 में द्वितीय स्थान प्राप्त कहानी

कलयुग की यशोधरा

लेखक- रचना गुप्ता
हेड पोस्ट ऑफिस, मुरादाबाद

कहानी कलयुग की यशोधरा का शेष भाग...

नताशा नरेश के खींचे व्यवहार को महसूस कर रही थी, लेकिन पहले उसने सोचा कि शायद ज्यादा काम या तबियत ढीली होने की वजह से हो। लेकिन धीरे- धीरे उसे कुछ ऐसे सबूत मिले जिससे उसे यह स्पष्ट हो गया कि उसका कारण उसके आफिस की स्टेनो है। परंतु एक समझदार बीबी के समान वह यह सोंचकर शांत हो गयी कि जीवन में ऐसे क्षण अक्सर आ जाते हैं लेकिन उसे विश्वास था कि ऐसे रिश्तों की उम्र कम होती है। और जिस तरह यह कहानी आरंभ हुई उसी प्रकार खत्म हो जाएगी। इसलिए उसने अपने पति से इस विषय पर बात करने की जरूरत नहीं समझी और सुधर कर घर गृहस्थी में पूर्ववत रुचि लेने की प्रतिक्षा करती रही। लेकिन एक सुबह जब सोकर उठी तो देख करक भौचक्की रह गयी कि नरेश अपने व्यक्तिगत सामान के साथ गायब था। उसे अपने तकिये के नीचे झांकता हुआ एक पत्र मिला। जिस पर लिखा था... मैं समझ नहीं पा रहा हूं तुमसे क्या और किस तरह कहूं, मैं जा रहा हूं। नरेश के दो वाक्य के पत्र ने नताशा को पत्थर बना दिया। न उसे बच्चों का होश था और न अपना और न घर- गृहस्थी का। बेटे के इस प्रकार घर छोड़ कर चले जाने पर सास-ससुर ने नताशा पर कितने लांछन लगाए। उसके कर्मों के कितने कशीदे कढ़े। जाने कितनों के साथ उसके कैसे कैसे रिश्ते जोड़े। वह यह सुन तो रही थी पर उसने अपने होंठ सी रखे थे। उसने अपनी सफाई में कुछ नहीं कहा और न ही अपने पति के इस प्रकार चले जाने का कारण अपने ससुर को बताया। उसके बच्चे इतने छोटे थे कि कुछ समझने योग्य नहीं थे। बस यही सब सोचकर वह सब सहती रही। तभी उसकी सास उसके पति को साथ लेकर उसे ढूंढ़ती हुई उसके कमरे में पहुंच गयी। 'अरे बहू, तुम यहां हो मैंने तुम्हें कहां नहीं ढूंढा, देख तो नरेश लौट आया है'। नताशा ने जैसे ही नरेश को देखा तो उसकी आंखों में उसकी एक मात्र सहेली स्नेह का चेहरा आ गया। जिसके साथ वह अपना सुख-दुख बांटा करती थी। नरेश के चले जाने के चौथे दिन ही अकस्मात स्नेह उससे मिलने चली आयी थी। लाख कोशिशों के बावजूद एकांत में नताशा स्नेह के सामने खुल गयी। नरेश के बारे में सुनकर स्नेह स्तब्ध रह गयी। नताशा की निराशायुक्त बातों को सुनकर उसने महसूस किया कि नताशा अंदर ही अंदर टूट गयी है। तब उसने नताशा को समझाने का प्रयत्न किया और गढ़ कर कई पुरुषों के पलायन के बारे में किस्से सुनाये कि किस प्रकार उसकी पत्नियों ने संघर्ष कर सफल जीवन को व्यतीत किया। पर वह स्वयं अनुभव कर रही थी कि उसकी सारी बातें, सारे उपदेश, सारे सुझाव खोखले व प्रभावहीन हैं। तो वह नताशा को कैसे प्रभावित कर सकती थी। जिस पर पहाड़ ही टूट पड़ा था। छोटे छोटे बच्चे, कच्ची गृहस्थी और आजीविका का कोई साधन नहीं। कैसे सब कुछ संभालेगी ? स्वयं स्नेह भी समझ नहीं पा रही थी। अंतत: स्नेह ने नताशा को झकझोर डाला, 'तुम अकेली ही अभागिन नहीं हो, औरतों की तकदीर ही अभाग्य की कलम से लिखी जाती है। कुछ औरतें पति के रहते हुए भी उसके सुख से वंचित रहती हैं जो कहीं अधिक कष्टकर होता है। तुम्हारे लिए यह तो अच्छा है कि वह पल्लू झाड़ कर चला गया है।" पर समस्या है कि मैं किसी को यह कैसे बताऊंगी कि वे मुझे छोड़ कर दूसरी औरत के पास चले गए हैं। नताशा के लिए नारीत्व पर यह आरोप असहनीय है। वह जानती थी कि स्थिति स्पष्ट होने के बाद भी वह ही घृणा की पात्र बनेगी। इस पुरुष प्रधान समाज में कोई भी उसके पति को दोषी नहीं बताएगा। सभी यही कहेंगे कि नताशा में ही कोई कमी होगी, जो वह अपने पति को काबू में नहीं रख पायी। कोई भी यह नहीं कहेगा कि नरेश को इस तरह कुत्तों की भांति बाहर की थाली में मुंह नहीं मारना चाहिए। उसे अपनी बीबी बच्चों को छोड़ कर नहीं जाना चाहिए। किसी को भी बताने की जरूरत नहीं है। मैं चुप रहूंगी। स्नेह ने समाधान करते हुए कहा 'पुरुष तो हमेशा ही औरतों पर अत्याचार करते रहे हैं, कारण कुछ भी रहा हो, जब यशोधरा जैसी महारानी को सिद्धार्थ छोड़ कर जा सकता है, तो फिह हम तुम साधारण औरतें किस खाने में आती हैं। तुम जरा अपने मासूम बच्चों की हालत देखो, बाप तो इन नामुरादों को छोड़ कर चला गया और तुम इन्हें जीते जी मारे डाल रही हो" बच्चों की बात सुनकर नताशा दहल गई। निस्संदेह स्नेह की बातों का असर पड़ा। स्नेह ने अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए कहा, तुम एक मां हो नताशा। एक मां, बाप नहीं कि पल्ला झाड़

कर अलग हट जाए। तुम्हारा तो इन बच्चों से संबंध और साथ नौ माह अधिक है। तुमने अपन कोख में इन्हें पाला है। अपने रक्त और मांस से इन्हें बनाया है। इन मासूमों ने क्या गुनाह किया है कि तुम इनकी तरफ से बेखबर हो गई हो ? नताशा एक कली को इतनी धूप सहनी पड़ेगी तो वह फूल बनने से पूर्व ही मुरझा जाएगी। इसलिए तुम अपना संपूर्ण ध्यान अपने बच्चों की ओर केंद्रित करो। क्या इनकी उपेक्षा कर तुम इनकी हत्या नहीं कर रही हो। नताशा स्नेह के कंधे से लग हिचकियां लेकर रोने लगी... रोती रही। इन बीते हुए तीन दिनों का ज्वालामुखी अश्रु बन कर बहने लगा। जब वह कुछ सामान्य हुई तो स्नेह ने पूछा, क्या तुम्हें पता है कि वे किस के पास गये हैं ? सब कुछ जानते हुए भी नताशा ने नकारात्मक भाव में गर्दन हिलाकर कहा, तुमने ठीक कहा कि मेरा नरेश भी सिद्धार्थ बनने चला गया है। जब आत्मज्ञान हो जाएगा तो लौट आएगा।

वह सारा दुख पी गयी और सामान्य होने का प्रयत्न करने लगी। बस उस दिन से आज तक सबको यही बता है कि नरेश ने संन्यास ले लिया है। दक्षिता और प्रखर की मध्यस्थता से यह बात आम कर दी गयी है और फिर स्नेह तो थी ही इस समर्थन के लिए कि नरेश संन्यासी हो गया है। स्वयं नताशा ने ने समय के साथ समझौता कर लिया। नताशा ने सिलाई कढ़ाई का डिप्लोमा किया हुआ था स्वयं का गारमेंट का काम शुरू कर दिया जो उत्तरोत्तर बढ़ता गया। इसी के सहारे वह जीवन की नैया खेती गयी। बच्चों के समझदार होने पर उसने उनके पिता की वास्तविकता से अवगत करा दिया। जिससे जीवन के किसी भी मोड़ पर उसे बच्चों से अपमानित न होना पड़े। नरेश की वास्तविकता इन तीनों और स्नेह के अतिरिक्त और कोई नहीं जानता था। आज नरेश लौट आया है। वह समझ नहीं पा रही थी कि ऐसे अवसर पर वह क्या करे ? स्वागत करे तथागत का या निरादर। अंततः उसने तटस्थ रहने का निश्चय किया और सास एवं पति को वहीं छोड़कर बाहर चली गयी। नताशा दक्षिता के विवाह के अवसर पर अशांति उत्पन्न करना नहीं चाहती थी। प्रखर एक समझदार पुत्र की तरह सारी व्यवस्था कर रहा था। वह स्वयं को भी अधिक व्यस्त रखने का प्रयत्न कर रही थी। यथा समय बारात आयी। औपचारिकताओं के बाद विवाह की रस्में आरंभ हुयीं। एकाएक अप्रत्याशित रूप से स्थिति विस्फोटक हो गयी। पंडित जी ने जब कन्यादान की रस्म की बात कही तो नरेश की मां ने कहा, जाओ बेटा अपनी बेटी का कन्यादान करो। यह सुनकर नताशा का चेहरा सफेद पड़ गया। उसे पुनः बीते हुए सालों का प्रत्येक क्षण याद आने लगा जब उसने कितनी कठिनाइयों से सास ससुरर की खरी-खरी बातों के बीच अपने बच्चों का पालन पोषण किया। मां के साथ साथ बाप के कर्तव्यों का पालन किया और आज उसकी बीस सालों की तपस्या का फल उसका पति ले जाएगा। जिससे सिर्फ उन्हें जन्म देकर अपने कर्तव्यों से छुटकारा पा लिया। नताशा का मन धुंआ- धुंआ हो गया। नरेश जब आगे बढ़ कर मंडप के निकट पहुंचा तो लाज शर्म की गठरी बनी दक्षिता उठ खड़ी हुयी। नफरत और क्रोध से उसने कहा, मैं इस आदमी से दान दिये जाने की अपेक्षा कुंवारी रहना पसंद करूंगी। दक्षिता कहना तो बहुत कुछ चाहती थी पर इतना ही कह सकी। नफरत के अतिरेक के कारण उसकी आंखों से चिनगारी निकलने लगीं। दक्षु के वाक्य से उभरे ज्वालामुखी के वेग को संभालते हुए स्नेह ने कहा, अरे प्रखर तुम अलग क्यों खड़े हो, तुम तो दक्षु के बड़े भाई हो, घर के कर्ताधर्ता हो, अपनी मां के उत्तराधिकारी हो, आगे आओ और कन्यादान करो। लगा कि सब जी उठे। एक बार फिर स्नेह ने अपनी सूझबूझ से काम लिया और सच्चे मित्र का कर्तव्य पूरा किया। ज्वालामुखी एक दम शांत हो गया। किसी के पास भी नरेश व नरेश की मां के भाव देखने का समय ही नहीं था। नरेश को इस तरह अपने बच्चों से अपमानित होने की आशा कतई नहीं थी। पर वह बिरादरी और नाते-रिश्तेदारों के सामने अपमानित हो चुका था। प्रखर ने अपनी बहन का कन्यादान किया। सबेरे उसकी डोली विदा हो गयी। घर के सभी सदस्य दरवाजे पर खड़े अश्रुपूर्ण नेत्रों से दक्षिता को देख रहे थे। डोली के आंखों से ओझल होते ही अपने आंसुओं को पोंछता हुआ प्रखर घर के अंदर चला गया और नरेश ने जाने की आज्ञा मांगी। नताशा के कान बजने लगे और सास ससुह की दी गयी उपाधियां पुनः वह अंतःकरण में सुनने लगी... कुलटा, अभागिन और इसी के साथ उसके कानों में दो शब्द और गूंजने लेगे... यशोधरा, सिद्धार्थ...। और वह चीख पड़ी... ठहरो। जाने के लिए पलट चुका नरेश पलट कर नताशा को देखने लगा। नताशा दो कदम गली में बढ़ कर बोली, यशोधरा के दरवाजे से सिद्धार्थ खाली हाथ न कभी लौटा था और न आज लौटेगा। नरेश अभी कुछ समझ पाता कि माता-पिता का हाथ उसके हाथ में देकर नताशा ने कहा, सिद्धार्थ तो तुम थे भी नहीं नरेश। खैर भिक्षा में अपने माता-पिता को साथ ले जाओ। और इत्मीनान से सांस लेती हुई घर के अंदर जाकर उसने दरवाजा बंद कर लिया।

(समाप्त)

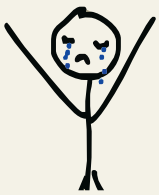

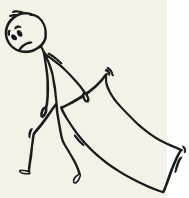

शिक्षा क्षेत्र में बदलाव ला चुका है कोविड-19

कोविड-19 के प्रकोप ने पूरे ग्रह पर 120 करोड़ से अधिक छात्रों और युवाओं को प्रभावित किया है। भारत में, विभिन्न प्रतिबंधों और कोविड-19 के लिए देशव्यापी बंद से 32 करोड़ से अधिक छात्र प्रभावित हुए हैं। यूनेस्को की रिपोर्ट के अनुसार, लगभग 14 करोड़ प्राथमिक और 13 करोड़ माध्यमिक छात्र प्रभावित हैं जो भारत में दो सबसे अधिक प्रभावित स्तर हैं।

कोरोनोवायरस महामारी की स्थिति को देखने के बाद डब्ल्यूएचओ ने रोकथाम की सलाह दी। हर देश ने प्रभावित लोगों को अलग करने के लिए लाकडाउन की कार्रवाई शुरू की। स्कूल, कालेज और विश्वविद्यालय सहित शिक्षा क्षेत्र बंद हो गया। निलंबित किए गए स्कूलों, कालेजों और विश्वविद्यालयों की प्रवेश परीक्षाओं सहित सभी कक्षाओं को अनिश्चितकाल के लिए स्थगित कर दिया गया। यह शिक्षा के इतिहास में असाधारण स्थिति है, लेकिन कोविड-19 ने कठोर कक्षा शिक्षण माडल से डिजिटल माडल के नए युग में आने के कई अवसर भी पैदा किए। लाकडाउन ने कई शैक्षणिक संस्थानों को अपनी कक्षाओं, परीक्षाओं, इंटर्नशिप आदि को रद्द करने और आनलाइन मोड चुनने के लिए मजबूर किया है। प्रारंभ में, शिक्षकों और छात्रों को काफी उलझन हुई। लेकिन बाद में सभी ने महसूस किया कि लाकडाउन ने इस तरह के महामारी के उद्भव के साथ प्रबंधन करने के लिए कई सबक सिखाए हैं।

कार्यप्रणाली- कोविड-19 के प्रसार को रोकने के लिए भारत सरकार ने कई निवारक उपाय किए हैं। केंद्र सरकार ने 16 मार्च 2020 को सभी शैक्षणिक संस्थानों के देशव्यापी बंद का ऐलान किया। केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड ने पूरे भारत में 18 मार्च, 2020 को माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की सभी परीक्षाओं को स्थगित कर दिया। केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड ने परीक्षा केंद्रों के लिए संशोधित दिशा-निर्देश जारी किए, जिसमें 24 से अधिक छात्रों के साथ कक्षा न लेने वाले छात्रों के बीच कम से कम 2 मीटर की दूरी बनाए रखकर परीक्षा आयोजित की जाए। संघ लोक सेवा आयोग ने सिविल सेवा परीक्षा 2019 के लिए

भारत की शिक्षा प्रणाली पर कोरोना के परिणाम

साक्षात्कार स्थगित कर दिया। इसी तरह अधिकांश राज्य सरकारों और अन्य शैक्षणिक बोर्डों ने कोविड-19 के प्रकोप के कारण परीक्षाएं स्थगित कर दीं। 22 मार्च को एक दिवसीय राष्ट्रव्यापी जनता-कर्फ्यू विभिन्न चरणों में लाकडाउन लागू किया गया। राज्य सरकारों ने इस दौरान शैक्षणिक गतिविधियाँ बाधित न होना भी सुनिश्चित करने का निर्देश दिया। सभी कक्षाएं आनलाइन आयोजित करने का निर्देश दिया। इस महामारी कोविड-19 स्थिति के दौरान अश्वनलाइन सीखना सबसे अच्छा समाधान है। इसलिए, कोविद -19 के कारण वर्तमान संकट को दूर करने के लिए सरकार की डिजिटल इंडिया ष्टि एक महत्वपूर्ण उपकरण के रूप में उभर रही है । यह एक तथ्य है कि प्रौद्योगिकी आधारित शिक्षा सभी मामलों में अधिक पारदर्शी है। कोविड-19 के दौरान माध्यमिक के साथ-साथ उच्च शिक्षा के लिए एमएचआरडी की डिजिटल पहल को नीचे सूचीबद्ध किया गया है।

माध्यमिक शिक्षा- दीक्षा पोर्टल में छात्रों, शिक्षकों और पाठ्यक्रम से जुड़े अभिभावकों के लिए ई-लर्निंग सामग्री है, जिसमें वीडियो पाठ, कार्यपत्रक, पाठ्यपुस्तकें और आकलन शामिल हैं। ई-पाठशाला एनसीईआरटी द्वारा कई भाषाओं में कक्षा 1 से 12 तक के लिए एक ई-लर्निंग ऐप है। ऐप में हिंदी, उर्दू और अंग्रेजी सहित कई भाषाओं में छात्रों, शिक्षकों और अभिभावकों के उद्देश्य से किताबें, वीडियो, आडियो आदि हैं। ओपन एजुकेशनल रिसोर्सेज (एनआरओईआर) पोर्टल का राष्ट्रीय भंडार, छात्रों और शिक्षकों के लिए कई भाषाओं में संसाधन प्रदान करता है जिसमें एसटीईएम-आधारित खेलों की मेजबानी सहित किताबें, इंटरैक्टिव माड्यूल और वीडियो शामिल हैं

उच्च शिक्षा- स्वयं, राष्ट्रीय आनलाइन शिक्षा मंच है, जो इंजीनियरिंग, मानविकी और सामाजिक विज्ञान, कानून और प्रबंधन पाठ्यक्रम सहित सभी विषयों में स्कूल (कक्षा 9 से 12) और उच्च शिक्षा (स्नातक, स्नातकोत्तर कार्यक्रम) दोनों को कवर करने वाले 1900 पाठ्यक्रमों की मेजबानी करता है। अनूठी विशेषता यह है कि यह पारंपरिक शिक्षा के साथ एकीकृत है। स्वयं प्रभा में 24 डीटीएच के आधार पर 32 डीटीएच टीवी चौनल हैं जो शैक्षिक सामग्री प्रसारित करते हैं। ये चौनल डीडी फ्री डिश सेट टाप बाक्स और एंटीना का उपयोग करके पूरे देश में देखने के लिए उपलब्ध हैं। चौनल कला, विज्ञान, वाणिज्य, प्रदर्शन कला, सामाजिक विज्ञान और मानविकी विषयों में स्कूली शिक्षा (कक्षा 9 से 12) और उच्च शिक्षा (स्नातक, स्नातकोत्तर, इंजीनियरिंग आउट-आफ-स्कूल बच्चे, व्यावसायिक पाठ्यक्रम और शिक्षक प्रशिक्षण) दोनों को कवर करते हैं। इंजीनियरिंग, प्रौद्योगिकी, कानून, चिकित्सा, कृषि। ई-पीजी पाठशाला स्नातकोत्तर छात्रों के लिए है। स्नातकोत्तर छात्र इस लाकडाउन अवधि के दौरान ई-पुस्तकों, आनलाइन पाठ्यक्रमों और अध्ययन सामग्री के लिए इस प्लेटफार्म का उपयोग कर सकते हैं।

शिक्षा प्रणाली पर कोविड-19 के संभावित परिणाम

भारतीय शिक्षा प्रणाली को एक पारंपरिक प्रणाली से एक नए युग में परिवर्तन का अवसर मिला। निम्नलिखित बिंदुओं को सकारात्मक परिणाम माना जा सकता है। **मिश्रित शिक्षण की ओर कदम:** कोविड-19 ने शिक्षा देने के लिए डिजिटल प्रौद्योगिकियों को अपनाने में तेजी लाई है। इसने सभी शिक्षकों और छात्रों को अधिक प्रौद्योगिकी प्रेमी बनने के लिए प्रोत्साहित किया।

लर्निंग मैनेजमेंट सिस्टम के उपयोग में वृद्धि: इसने उन कंपनियों के लिए एक शानदार अवसर खोला जो शिक्षण संस्थानों में उपयोग के लिए लर्निंग

मैनेजमेंट सिस्टम को विकसित, मजबूत कर रहे हैं।

शिक्षण सामग्री की साफ्ट कापी का उपयोग बढ़ाएं: लाकडाउन स्थितियों में छात्र अध्ययन सामग्री की हार्ड करपी एकत्र करने में। सक्षम नहीं थे और इसलिए अधिकांश छात्र संदर्भ के लिए साफ्ट कापी सामग्री का उपयोग करते थे।

सहयोगी कार्य में सुधार- एक-दूसरे को लाभ पहुंचाने के लिए दुनिया भर के संकाय शिक्षकों के बीच सहयोग भी हो सकता है। आनलाइन बैठकों में वृद्धि- महामारी ने टेलीकांफ्रेंसिंग, आभासी बैठकों, वेबिनार और ई-कान्फ्रेंसिंग के अवसरों में बड़े पैमाने पर वृद्धि की है।

बढ़ी हुई डिजिटल साक्षरता: महामारी की स्थिति ने लोगों को डिजिटल तकनीक सीखने और उसका उपयोग करने के लिए प्रेरित किया और परिणामस्वरूप डिजिटल साक्षरता बढ़ी।

सूचना साझा करने के लिए इलेक्ट्रानिक मीडिया के उपयोग में सुधार: छात्रों के बीच सीखने की सामग्री को आसानी से साझा किया जाता है और संबंधित प्रश्नों को ई-मेल, एसएमएस, फोन काल और व्हाट्सएप या फेसबुक जैसे विभिन्न सामाजिक मीडिया का उपयोग करके हल किया जाता है।

वर्ल्ड वाइड एक्सपोजर: शिक्षकों और शिक्षार्थियों को दुनिया भर के साथियों के साथ बातचीत करने के अवसर मिल रहे हैं। शिक्षार्थियों एक अंतरराष्ट्रीय समुदाय के लिए अनुकूलित।

बेहतर समय प्रबंधन: छात्र महामारी के दौरान आनलाइन शिक्षा में अपने समय का अधिक कुशलता से प्रबंधन करने में सक्षम हैं।

ओपन एंड डिस्टेंस लर्निंग (ओडीएल) की मांग: महामारी की स्थिति के दौरान अधिकांश छात्र ओडीएल मोड को प्राथमिकता देते थे क्योंकि यह विभिन्न संसाधनों से सीखने के लिए स्व-सीखने के अवसर को प्रोत्साहित करता है और उनकी आवश्यकताओं के अनुसार अनुकूलित शिक्षण करता है।

शिक्षा प्रणाली पर कोविड-19 के नकारात्मक परिणाम

कोविड-19 के प्रकोप से शिक्षा क्षेत्र को बहुत नुकसान हुआ है। इसने शिक्षा पर कई नकारात्मक परिणाम पैदा किए हैं और उनमें से प्रमुख ये हैं -

शैक्षिक गतिविधि में बाधा: कक्षाएं और परीक्षाएं विभिन्न स्तरों पर स्थगित। विभिन्न बोर्ड पहले ही वार्षिक परीक्षाओं और प्रवेश परीक्षाओं को स्थगित कर चुके हैं। एडमिशन प्रक्रिया में देरी। 2020-21 के पूर्ण शैक्षणिक वर्ष के लगभग 4 महीने का नुकसान हुआ और छात्रों को भारी अंतर के बाद फिर से स्कूली शिक्षा को फिर से शुरू करने में बहुत कठिनाई का सामना करना पड़ेगा।

रोजगार पर परिणाम: अधिकांश भर्तियां स्थगित। छात्रों के प्लेसमेंट भी प्रभावित। बेरोजगारी दर में वृद्धि होने की आशंका।

आनलाइन शिक्षा के लिए अनपेक्षित शिक्षक छात्र: सभी शिक्षक छात्र इसमें अच्छे नहीं होते हैं या कम से कम ये सभी आमने-सामने सीखने से लेकर आनलाइन सीखने तक के लिए तैयार नहीं थे। अधिकांश शिक्षक सिर्फ वीडियो प्लेटफार्म जैसे जूम, गूगल मीट आदि पर व्याख्यान हो रहे हैं।

कम वैश्विक रोजगार के अवसर: छात्रों को कोविड-19 के कारण प्रतिबंधों के कारण देश से बाहर नौकरी मिलने की संभावनाएं कम। कई भारतीय विदेशों में नौकरी गंवाने के बाद घर लौट सकते हैं। कैंपस प्लेसमेंट से नौकरी पा चुके छात्रों को भी नौकरी में शामिल होने की उम्मीद कम।

अपने वार्ड को शिक्षित करने के लिए माता-पिता की बढ़ती जिम्मेदारी: कुछ शिक्षित माता-पिता मार्गदर्शन करने में सक्षम हैं, लेकिन कुछ के पास घर में बच्चों को पढ़ाने के लिए आवश्यक शिक्षा का पर्याप्त स्तर नहीं हो सकता है।

स्कूल बंद होने के कारण पोषण की हानि: स्कूलों के बंद होने से छात्रों के दैनिक पोषण पर गंभीर प्रभाव पड़ता है क्योंकि मध्याह्न भोजन योजनाएं अस्थायी रूप से बंद हो गई हैं।

डिजिटल दुनिया तक पहुंच: कई छात्र इंटरनेट का उपयोग करने में सक्षम नहीं है। कई अपने घरों में कंप्यूटर, लैपटाप या सहायक मोबाइल फोन का खर्च उठाने में भी सक्षम नहीं। आनलाइन शिक्षण छात्रों के बीच एक डिजिटल विभाजन पैदा कर सकता है। आनलाइन शिक्षण-शिक्षण पद्धति अमीर गरीब और शहरी ग्रामीण के बीच अंतर को बढ़ा सकती है।

वैश्विक शिक्षा तक पहुंच: बड़ी संख्या में भारतीय छात्र जो विदेशों में कई विश्वविद्यालयों में नामांकित हैं, विशेष रूप से सबसे बुरी तरह प्रभावित देशों में अब उन देशों को छोड़ रहे हैं और अगर स्थिति बनी रहती है, तो लंबे समय में, अंतर्राष्ट्रीय उच्च शिक्षा की मांग में उल्लेखनीय गिरावट आएगी।

स्कूलों, कालेजों शुल्क के भुगतान में देरी: इस लाकडाउन के दौरान अधिकांश माता-पिता बेरोजगारी की स्थिति का सामना कर रहे होंगे, इसलिए वे उस विशेष समय अवधि के लिए शुल्क का भुगतान करने में सक्षम नहीं हो सकते हैं जो निजी संस्थानों को प्रभावित कर सकते हैं

निष्कर्ष-भारतीय सरकार और शिक्षा के विभिन्न हित धारकों ने कोविड-19 के वर्तमान संकट से निपटने के लिए विभिन्न डिजिटल तकनीकों को अपनाकर ओपन एंड डिस्टेंस लर्निंग की संभावना का पता लगाया है। भारत डिजिटल प्लेटफार्मों के माध्यम से शिक्षा को राष्ट्र के सभी कोनों तक पहुंच बनाने के लिए पूरी तरह से सुसज्जित नहीं है। जो छात्र दूसरों की तरह विशेषाधिकार प्राप्त नहीं हैं, वे डिजिटल प्लेटफार्म की वर्तमान पसंद के कारण पीड़ित होंगे। लेकिन विश्वविद्यालय और भारत सरकार इस समस्या के समाधान के लिए अथक प्रयास कर रहे हैं। भारत में लाखों युवा छात्रों के लिए एक लाभप्रद स्थिति बनाने के लिए डिजिटल तकनीक का उपयोग करना प्राथमिकता होनी चाहिए। शैक्षणिक संस्थानों को अपने ज्ञान और सूचना प्रौद्योगिकी के बुनियादी ढांचे को मजबूत करने के लिए यह समय की जरूरत है कि वे कोविड-19 जैसी परिस्थितियों का सामना करने के लिए तैयार रहें।

डॉ. मोहित गुप्ता, एसोसिएट प्रोफेसर
श्री राम मूर्ति स्मारक कालेज ऑफ इंजीनियरिंग टेक्नोलाजी, बरेली (फार्मेसी)

कोविड संक्रमण से स्वस्थ होकर घर जाते समय बोले शरद विनोद

विश्वस्तरीय है एसआरएमएस का आईसीयू

एसआरएमएस के प्राइवेट वार्ड में शरद व नन्दिनी

बरेली: बरेली के ग्रीन पार्क निवासी शरद विनोद आडियो वीडियो का काम करते हैं। आठ अक्टूबर को उनकी तबियत खराब हुई। सांस लेने में दिक्कत हो रही थी और शरीर में आक्सीजन का स्तर काफी कम हो रहा था। कोविड पाजिटिव होने और पहले से ही डायबिटीज और हाइपरटेंशन से पीड़ित होने से डाक्टरों ने उन्हें तुरंत अस्पताल में भर्ती होने की सलाह दी। शाम को ही वह 300 बेड अस्पताल में भर्ती हुए, लेकिन जरूरी स्वास्थ्य सुविधाएं न होने से इन्हें एसआरएमएस मेडिकल कालेज रेफर कर दिया गया। उसी दिन देर रात एसआरएमएस पहुंचे। जहां डा.एमपी रावल ने अटैंड किया। फेफड़े काफी खराब हो चुके थे। इसी वजह से सांस लेने में दिक्कत थी। वेंटिलेटर सपोर्ट के साथ ट्रीटमेंट शुरू हुआ। तबियत में सुधार होने और कोविड जांच में निगेटिव आने पर इन्हें 20 अक्टूबर को आईसीयू में शिफ्ट किया गया। इसी दौरान शरद का आक्सीजन लेबल फिर गिर गया। अचानक सांस लेने में दिक्कत बढ़ गई। ऐसे में डाक्टरों ने इन्हें फिर से वेंटिलेटर सपोर्ट दिया। इस दौरान क्रिटिकल केयर इंचार्ज डा.ललित सिंह ने उन्हें सही होने का भरोसा दिया। हर तरह का उपचार दिया गया। शरद फिर स्वस्थ हुए। दो नवंबर को इन्हें प्राइवेट वार्ड में शिफ्ट किया गया। तीन नवंबर को घर जाने की इजाजत मिल गई। घर जाते समय शरद और उनकी पत्नी नंदिनी ने एसआरएमएस के डाक्टरों का आभार जताया। डा.ललित को तो नंदिनी ने अपने पिता का दर्जा दिया। कहा कि वह हर मरीज को पिता की तरह ही प्रोत्साहित करते हैं। उनसे मिले भरोसे से ही उन्हें शक्ति मिली और शरद स्वस्थ हुए। स्वस्थ होने के लिए करीब एक महीने एसआरएमएस में रहने शरद यहां की सुविधाओं और ट्रीटमेंट से पूरी तरह संतुष्ट हैं और तारीफ करते हैं।

वे कहते हैं कि यहां समय से खाना, दवा और ट्रीटमेंट मिला। इसी वजह से वह स्वस्थ हो सके हैं। नंदिनी एसआरएमएस के आईसीयू की तारीफ करती हैं। कहती हैं कि बरेली के ज्यादातर लोगों की तरह उन्हें भी यहां के आईसीयू पर विश्वास नहीं था। लेकिन यहां के उपकरण और सुविधाएं किसी भी बड़े शहर के अस्पताल के आईसीयू से किसी मामले में कम नहीं है। यह सच में विश्वस्तरीय है। इसके लिए शरद और नंदिनी दोनों एसआरएमएस को दस में से 9.5 नंबर देते हैं। नंदिनी यहां मनाए गए करवा चौथ को भी याद करती हैं। कहती हैं कि यह दिन हमें हमेशा याद रहेगा। करवा चौथ के दिन शरद प्राइवेट वार्ड में शिफ्ट हो चुके थे। मैंने घर में पूजा की और फिर अस्पताल में पहुंच कर चांद देखा और शरद से मिली। वाकई न भूलने वाला पल था। सभी के लिए एसआरएमएस का शुक्रिया।

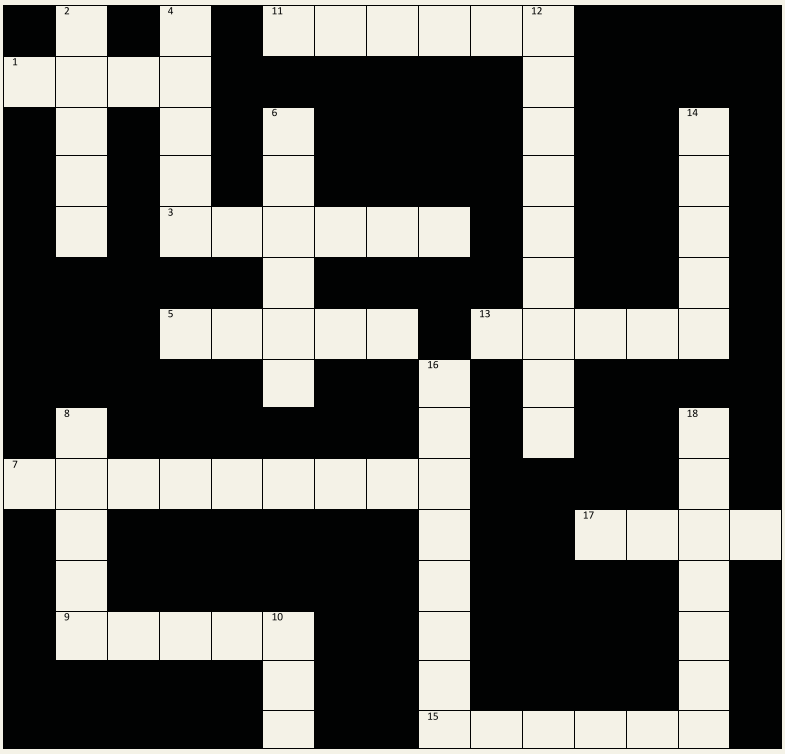

HORIZONTAL

1. The State Flower of New York
3.National Flower of Thailand
5.Cheerful, Hardy, Cool Season Flowers
7.Sun Bright Petals
9.Worn in Australia to Commemorate Soldiers Who died in War 11.Flower with Smallest Seed
13.Symbol of Enlightenment in Buddhism
15.Very Gorgeous Long Blooming Flower
17.Woody Stem, Greyish Leaves, Blue to Purplish Flowers

VERTICAL

2.National flower of India
4.Long Lived Fragrant Flowers
6.Indigenous to South Africa, symbolise order and harmony
8.Its Bulb Can Be Used in Place of Onion for Cooking 10. Also Called Tree of Death
12.Most Common Broadleaf Weed
14.Disc of This Flower is Made Up of Many Tiny Flowers
16.Also Called Bride of Sun
18.Poisnous Flowers
16. fin-footed animal
18.Fastest land animal

SHRI RAM MURTI SMARAK TRUST
1990-2020
30
GLORIOUS YEARS
INDIA

Crosswords No. 7

क्रॉस वर्ड एवं सुडोकू का
परिणाम अगले अंक में देखें

Sudoku No. 7

				4				1
		8	7					
		9						
					3		9	
2	9			7				3
	6							
1	7			2				
						3		
	4		5			9	8	

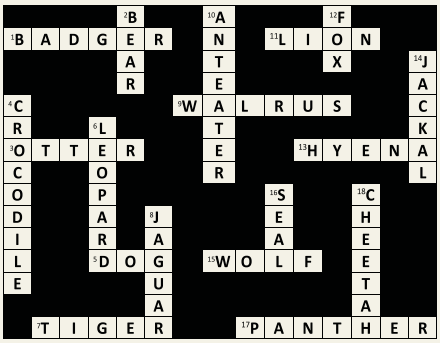

Answer: Crosswords No. 6

7	1	3	2	5	4	8	9	6
6	8	9	1	3	7	5	2	4
4	5	2	8	9	6	7	3	1
8	2	1	5	7	3	6	4	9
5	6	4	9	8	2	1	7	3
9	3	7	6	4	1	2	8	5
3	9	6	7	2	5	4	1	8
2	4	5	3	1	8	9	6	7
1	7	8	4	6	9	3	5	2

Answer: Soduko No. 6

Tushar Traders

Whole Sale Chemist & Druggist

27, Dua Market, Nath Nagri, Bareilly

Ph.: 0581-2458743, 9319908151
9897346445, 9720108151